lndu Kumari.

Assistant. Professor, Dept. of Economics, B. N. College, Bhagalpur, T. M. Bhagalpur University, Bhagalpur,

प्राथमिक आंकड़े(Primary Data)

सांख्यिकी का आंकड़े प्राथमिक अथवा गोण हो सकते हैं। प्राथमिक आंकड़े वे होते हैं जिन्हें सर्वप्रथम एकत्रित किया जाता है वह मौलिक होते हैं वह मालिक होते हैं वह सामान जिन्हें अनुसंधानकर्ताओं द्वारा अपने प्रयोग हुए सर्वप्रथम एकत्रित किए जाते हैं प्रायः प्राथमिक समंक कहलाते हैं। अतः प्राथमिक समकं अनुसंधानकर्ताओं द्वारा स्वयं एकत्रित किए जाते हैं यदि अनुसंधानकर्ता फैक्ट्री श्रमिकों की मजदूरी के बारे में अनुसंधान तय करना चाहता है तो वह फैक्ट्री से दूसरी फैक्ट्री में जा सकता है और उनसे स्वयं पूछ सकता है और सुमन को का सारणी विश्लेषण कर सकता है तथा समन को को लाभप्रद बनाने हेतु समन को को एकत्रित करने के लिए आवश्यक कदम उठा सकता है प्राथमिक समंक के एकत्रित हेतु निम्नलिखित पांच विधियां हैंः-

I. प्रत्यक्ष व्यक्तिगत जांच अर्थात साक्षात्कार विधि (Direct personal interview)
II. अप्रत्यक्ष मौखिक जांच (Indirect Oral Investigation)
III. स्थानीय स्रोतों या संवाददाताओं से सूचना प्राप्ति (Information from local source or correspondence)
IV. प्रश्नावली के माध्यम से सूचना संग्रह (information through questionnaire)
    - डाक प्रश्नावली विधि (Mailing Method)
    - गानको द्वारा अनुसूचियां भरना (Enumerators Method)

प्रत्यक्ष व्यक्तिगत जांच अर्थात साक्षात्कार विधि (Direct personal interview)

यह विधि प्राथमिक समंक संकलन की सर्वश्रेष्ठ विधि है। इस विधि के अंतर्गत अनुसंधानकर्ता स्वयं समको का संकलन करता है। वह प्रत्येक व्यक्ति के साथ स्वयं जाकर उससे अनुसंधान संबंधी प्रश्न पूछता है, और आवश्यक सूचनाएं एकत्रित करता है। और उनके लिए आवश्यक एवं पूर्ण सूचना प्राप्त करने हेतु आवश्यक कदम उठाता है। इस विधि द्वारा सफलतापूर्वक समकं एकत्रितकरण हेतु अनुसंधानकर्ता को सूक्ष्म दृष्टा, नम्र, पक्षपात रहित होना चाहिए, तथा

स्थानीय परिस्थितियों, वातावरण, एवं भाषा से अवगत होना चाहिए वह वार्तालाप करने में दक्ष होना चाहिए क्योंकि उसे विभिन्न प्रकृति व्यवहार एवं सामाजिक स्तर के व्यक्तियों से आवश्यक सूचनाएं प्राप्त करनी है।

गुण- इस विधि द्वारा समंक संकलन के निम्नलिखित लाभ हैंः

- मौलिक आंकड़े
- उच्च स्तर की परिशुद्धता
- विश्वसनीय आंकड़े
- समंक संकलन में समरूपता
- लोगों से उत्साहवर्धक उत्तर देने की संभावना
- संधान करता द्वारा सुगमता से प्राप्त सूचना की सत्यता की जांच करने की अधिक संभावन

अवगुण- इस विधि में निम्नलिखित गुण पाए जाते हैं।

- यह बहुत महंगी है क्योंकि इसमें समय व धन दोनों ही अधिक खर्च होते हैं
- सांख्यिकी अनुसंधान का विस्तृत क्षेत्र होने पर यह विधि अनुप्रयुक्त सिद्ध होती है अर्थात यह विधि अनुसंधान के विस्तृत क्षेत्र में उतनी सफलता पूर्वक व संतोषजनक ढंग से प्रयोग में नहीं लाई जा सकती जितनी कि छोटे व सीमित क्षेत्र में।
- इस विधि में व्यक्तिगत पक्षपात के अवसर होने से संबंध और विश्वसनीय होते हैं।
- इस विधि के प्रयोग हेतु कुशलता व प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है अप्रशिक्षित अनुसंधानकर्ता सारे अनुसंधान कार्य को बिगाड़ सकता है।

अप्रत्यक्ष मौखिक जांच

इस विधि के अंतर्गत अनुसंधानकर्ता स्वयं प्रत्यक्ष रुप से सूचना एकत्रित ना करके उन्हें अप्रत्यक्ष रूप से उन व्यक्तियों के माध्यम से प्राप्त करता है, जो सूचनाओं से अवगत है, और जो उपलब्ध सूचनाओं को देने के लिए **तत्पर होते हैं। इस यह विधि** तब प्रयोग में लाई जाती है जब अनुसंधानकर्ता द्वारा प्रत्यक्ष संबंध स्थापित करना संभव ना हो या एकत्रित की जाने वाली सूचनाएं जटिल प्रकृति वाली हो, और सूचना का क्षेत्र बड़ा व विस्तृत हो ।

गुण- इस विधि के गुण निम्नलिखित हैं

- कम खर्चीली- इसमें समय शक्ति वर्धन कम खर्च होता है।

- सरल व सुविधाजनक विधि है।
- जब अनुसंधान का क्षेत्र पर्याप्त मात्रा में बड़ा व विस्तृत हो तो यह विधि बहुत लाभकारी सिद्ध होती है।
- विधि में व्यक्तिगत पक्षपात की संभावना नहीं होती।
- किस विधि द्वारा संपूर्ण जानकारी सुगमता पूर्वक प्राप्त की जा सकती है।
- इस विधि की सहायता से पर्याप्त एवं पूर्ण जानकारी एकत्रित की जा सकती है।

अवगुण- इस विधि में निम्नलिखित गुण पाए जाते हैंः

- यद्यपि इस विधि में व्यक्तिगत पक्षपात की बहुत कम संभावना होती है परंतु सूचना देने वाला पक्षपात कर सकता है अतः इसमें भी कुछ हद तक पक्षपात होने की संभावना रहती है।
- इस विधि में सूचक का निष्ठावान होना अत्यंत आवश्यक है। अन्यथा एकत्रित सूचना ठीक नहीं हो सकती।
- कभी-कभी सूचक को पर्याप्त सूचनाओं का ज्ञान नहीं होता है, और ना ही उसके पास पर्याप्त उपकरण होते हैं, परंतु फिर भी वह सूचनाएं देने के लिए तत्पर होता है ऐसी स्थिति में सूचनाएं लाभदायक नहीं होती।
- अनेक सूचक होने से कार्य में एकरूपता नहीं पाई जाती।
- सूचक अज्ञानी व लापरवाह एवं पक्षपाती होने पर एकत्रित समंक शुद्ध नहीं होते।